जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में पर्यटन विकासः एक भौगोलिक अध्ययन

प्राप्तिः 05.08.2024
स्वीकृतः 15.09.2024

59

डॉ0 विजय कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विज्ञान,
धनौरी पी0जी0 कॉलेज, धनौरी (हरिद्वार)
ईमेलः *vijayneetu83@gmail.com*

सारांश

आदिकाल से ही परिभ्रमण मनुष्य की एक मूल प्रवृत्ति रही है। मनुष्य जन्मजात, महत्वाकांक्षी और जिज्ञासु होता है। वह सतत् अन्वेषण और आविष्कारों के माध्यम से नई जानकारियाँ तलाशता रहता है। वर्तमान समय में परिवहन एवं संचार माध्यमों में जो क्रान्ति आई है उसके फलस्वरूप सम्पूर्ण जगत एकीकृत हो गया है। फलतः पर्यटन का आनन्द उठाने के प्रति लोग दिनोंदिन अधिक उन्मुख होते जा रहे हैं। यही कारण है कि आज पर्यटन एक उद्योग बन गया है जो विदेशी मुद्रा और रोजगार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस उद्योग की सबसे बड़ी विषेशता यह है कि राष्ट्रीय सम्पत्ति का निर्यात हुए बिना ही इस उद्योग के माध्यम से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। पर्यटन उद्योग का विकास राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीय संबंध को मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध होता है, पर्यटन के माध्यम से मनुष्य एक दूसरे की सभ्यता और संस्कृति से अवगत होता है। यह कलाकृतियाँ और सांस्कृतिक गतिविधियों को गति प्रदान करता है। पर्यटन उद्योग के विकास के साथ–साथ राष्ट्रीय महत्व के ऐतिहासिक स्मारकों, संग्रहालयों, जैविक उद्यानों और पारस्परिक सौन्दर्यों का भी आविष्कार और विकास होता है।

मुख्य शब्द

मानव, पर्यटन, उद्योग, रोजगार, परिवहन, संचार

प्रस्तावना

एक जीव के रूप में एक स्थान से दूसरे स्थान पर आगमन करना मनुष्य की प्राकृतिक आवश्यकता के साथ साथ स्वभाव भी है। कभी वह अपनी नितान्त भौतिक आवश्यकताओं– भोजन व खाद्य पदार्थों के संकलन, पशुचारण, ईंधन के लिए लकड़ियां एकत्रित करने तो कभी अपने मानवीय सम्बन्धों को निभाने के लिए अपने निवास स्थल से दूर कृषि खेतों, चारागाहों, वनों, खानों जलस्रोतों आदि की और गमन करता है। दूसरी और किसी द्वितीयक उद्देश्यों– रिश्तेदारी, व्यापार–वाणिज्य, शिक्षा व विद्यार्जन करने, स्वास्थ्य लाभ, मनोरंजन, सरकारी व राजकीय कार्यों से, नौकरी करने, धर्मार्थ यात्रा आदि के लिए दूरस्थ स्थानों पर जाकर अपने उद्देश्यों को पूर्ण करता है। यद्यपि इनमें से अधिकांश को आधुनिक पर्यटक गतिविधियां नहीं कहा जा सकता है किन्तु अपने स्वभाव से ही मनुष्य आदि काल से ही यात्राएं करता रहा है। पर्यटन और पर्यटक/यात्री या सैलानी शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द Tourism & Tourist का हिन्दी रूपान्तर है जिसका मूल शब्द Tour & Tourist है। यह शब्द लैटिन भाषा के शब्द Tornos से लिया गया है। लैटिन शब्द Tornos का अर्थ पहिए के सदृश दिखने वाला यन्त्र होता है। इस प्रकार पर्यटन शब्द का अभिप्राय पर्यटक द्वारा एक पहिए की भाँति एक स्थान से चलकर कई स्थानों से होते हुए पुनः अपने मूल स्थान या पूर्ववर्ती स्थान पर वापस आने की समस्त क्रिया–कलाप से होता है। वर्तमान समय में पर्यटन शब्द का प्रयोग विभिन्न उद्देश्यों से विभिन्न स्थानों की यात्रा, मनोरंजन, भ्रमण, पर्यटन तथा विभिन्न राष्ट्रों व क्षेत्रों के स्थलों के भ्रमण, या यात्रा आदि करने के लिए किया जाता है। इसमें भ्रमण करने वाले मानव को ही पर्यटक कहा जाता है।

अतः उत्तराखण्ड राज्य के जनपद हरिद्वार की ऐतिहासिक, धार्मिक, शैक्षिक व भू–आकृतिक पृष्ठभूमि को दृष्टिगत रखते हुए यहाँ पर्यटन की दृष्टि से परिचित तथा अपरिचित स्थानों को

दृष्टिगोचर कर उनकी विषेशताओं का अध्ययन करना व भविष्य में इन स्थानों का विकास एवं नवीन पर्यटन स्थलों को चिह्नित कर उनके विकास की सम्भावनाओं का अध्ययन करना ही मेरे शोध–प्रबंध का मुख्य उद्देश्य है।

अध्ययन क्षेत्र

उत्तराखण्ड राज्य के दक्षिणी–पश्चिमी भाग में उत्तर प्रदेश की सीमा के निकट फैले जनपद हरिद्वार को शोध क्षेत्र के रूप में चुना है। यह क्षेत्र उप–हिमालय के मध्यवर्ती भाग में हिमालय व शिवालिक के बीच नदियों की मिट्टी व बालू से निर्मित है। कुछ ऊँचे घाटी मैदान भी मिलते हैं, जिन्हें पश्चिम में दून कहते हैं। यह जनपद प्रशासनिक दृष्टि से गढ़वाल मण्डल में आता है। अध्ययन क्षेत्र जनपद हरिद्वार का भौगोलिक अक्षांशीय विस्तार $29^0$35′ उत्तर से एवं देशान्तरीय विस्तार $77^0$45′ पूर्व से $78^0$20′ पूर्व चतुर्भजाकर आकार में है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल 2360 वर्ग कि०मी० है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद में कुल 1890422 लाख व्यक्ति है। जनसंख्या घनत्व 801 वयक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है जोकि उत्तराखण्ड के औसत जनघनत्व 189 से लगभग 5 गुना है। जनपद का लिंगानुपात 887 स्त्रियां प्रति हजार पुरूष हैं। प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य के प्रमुख पर्यटन जनपद हरिद्वार के पर्यटन का अध्ययन है। उत्तराखण्ड राज्य को पर्यटन नीति 2001 के अन्तर्गत पर्यटन प्रदेश के रूप में स्थापित कर विश्व के पर्यटन मानचित्र में स्थापित करने की कल्पना की गयी

है। राज्य के सभी जनपद पर्यटन के लिए आकर्षण का केन्द्र रहे हैं, परन्तु जनपद हरिद्वार उन सभी जनपदों में पर्यटकों के आकर्षण का सबसे बड़ा केन्द्र इसलिए रहा है क्योंकि हरिद्वार समतल मैदान एवं पर्वतीय क्षेत्र दोनों स्थलों के दृश्य प्रस्तुत करता है।

अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति

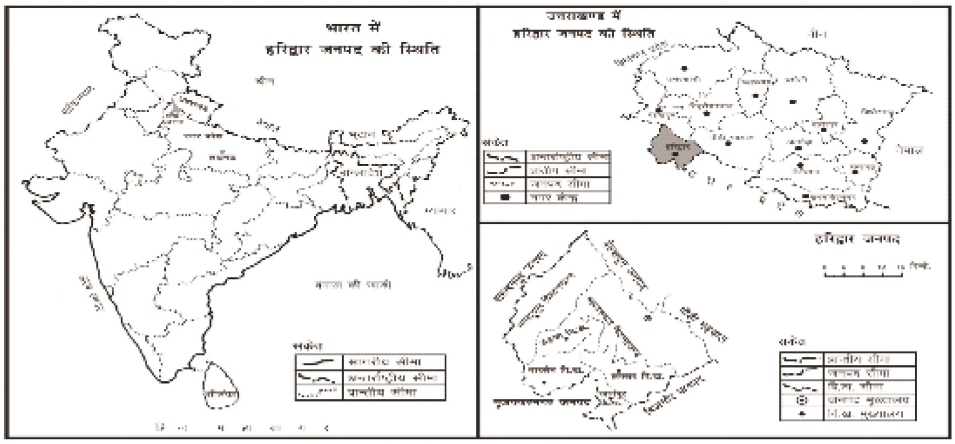

उद्देश्य

जनपद में पर्यटन के अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

1. अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक स्वरूप की व्याख्या करना।

2- अध्ययन क्षेत्र में पर्यटन के उत्पादों को चिन्हित करना।

3. नवीन पर्यटन स्थलों को चिन्हित कर उनके विकास के लिए आवश्यक सुविधाओं का नियोजन प्रस्तुत करना।

4. विदेशी व घरेलू पर्यटकों के सम्मुख आने वाली समस्याओं को चिन्हित करना एवं उनके लिए नियोजन एवं सुझाव प्रस्तुत करना।

5. विदेशी एवं घरेलू पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए वर्तमान सुविधाओं के अतिरिक्त अन्य सुविधाओं के लिए नियोजन प्रस्तुत करना।

6. पर्यटन के विकास के लिए नियोजन एवं सुझाव प्रस्तुत करना।

भौतिक स्वरूप

देव भूमि उत्तराखण्ड के प्रवेश द्वार के नाम से जाना जाने वाला हरिद्वार उत्तर प्रदेश और उत्तराखण्ड राज्यों की सीमा पर का गंगा और यमुना नदी के मध्य स्थित है। जनपद के उत्तरी भाग में शिवालिक पहाड़ियाँ, उत्तर पूर्व में चण्डी रिजर्व फारेस्ट, दक्षिण में मुजफ्फरनगर, पश्चिम में सहारनपुर जनपद, पूर्व में कोटावाली नदी इस जनपद बिजनौर से अलग करती हैं। हरिद्वार की समुद्र तल से ऊँचाई 232 मीटर से 869 मीटर तक है। हरिद्वार गढ़वाल के सभी तीर्थों का प्रवेश द्वार है।

शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी एवं गंगा के मैदान में फैला हरिद्वार गढ़वाल हिमालय को गंगा के मैदान से जोड़ने में एक कड़ी का कार्य करता है। गंगा के दाहिने किनारे पर स्थित यह जनपद, उत्तराखण्ड का सबसे महत्वपूर्ण मैदानी क्षेत्र एवं गढ़वाल के समस्त तीर्थों का प्रवेश द्वार है। जनपद की भौतिक संरचना विश्व के नवीनतम व उच्चतम मोड़दार पर्वतों– हिमालय पर्वेतों की निर्माण प्रक्रिया से जुड़ी हुई है। शिवालिक श्रेणी के बाहर के अधिकतर हरिद्वार जनपद के पर्वतपदीय व मैदानी धरातल की संरचना में बारीक कंकड़, पत्थर, रेतयुक्त चिकनी जलोढ़ मिट्टी पायी जाती है। गंगा के किनारों पर मिलने वाली मिट्टी बलुई व कम चिकनी होती है। इसका रंग भूरा होता है जो प्रतिवर्ष बाढ़ द्वारा उपजाऊ हो जाती है। प्लीस्टोसीन तथा आधुनिक काल में निक्षेपित कॉप मिट्टी की गहराई 16 मीटर तक है। जनपद के सम्पूर्ण भू–भाग को सामान्यतः पाँच भू–आकृतिक प्रदेशों में बाँटते हैं–

1. पूर्वी शिवालिक या पूर्वी गंगा पारीय क्षेत्र। 2. उत्तरी शिवालिक। 3. घाड़ क्षेत्र। 4. सोलानी नदी का खादर क्षेत्र 5. गंगा नदी का तराई क्षेत्र।

अपवाह तन्त्र

भूपृष्ठीय जल की दृष्टि से हरिद्वार धनी है। जनपद के उत्तर में पश्चिम से पूर्व को फैला हिमालय पर्वत (बाह्य हिमालय या शिवालिक श्रेणी) जनपद के अपवाह तन्त्र को नियन्त्रित करती है। जनपद की प्रमुख नदियों में गंगा, सौलानी, कोटावली, पीली, रवासन एवं रतमऊ नदियाँ हैं।

जनसंख्या

हरिद्वार उत्तराखण्ड का सर्वाधिक जनसंख्या वाला जनपद है। जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार हरिद्वार की जनसंख्या 1890422 व्यक्ति है। हरिद्वार जनपद का क्षेत्रफल 2360 वर्ग कि0मी0 और जनसंख्या का घनत्व उत्तराखण्ड में सर्वाधिक 817 व्यक्ति प्रति वर्ग कि-मी. है। हरिद्वार की 1180413 (62.44 प्रतिशत) व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्रों, 16915 (0.90 प्रतिशत) वन क्षेत्रों में और 693094 (36. 66 प्रतिशत) व्यक्ति नगरीय क्षेत्रों में निवास करते हैं।

हरिद्वार जनपद के पर्यटन स्थल माँ गंगा के तट पर बसा हरिद्वार का तीर्थो में महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ पर अनेक मन्दिर, आश्रम एवं दर्शनीय स्थल है। माया देवी मन्दिर, चण्डी देवी, भीमगोड़ा कुण्ड, पिरान कलियर, ऐतिहासिक तीसरी पातसाही का गुरूद्वारा आदि जैसे अनेक दर्शनीय स्थल हैं जो पर्यटक सैलानियों एवं भक्तों को अपनी और आकर्षित करते हैं। हर की पौड़ी का तो शास्त्रों में महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक सांय काल हर की पौड़ी पर पतित पावनी माँ गंगा की आरती के समय आलौकिक दृश्य होता है। जहाँ विश्व भर के लोग माँ गंगा के इस रूप का दर्शन करने आते हैं और अपना जीवन धन्य मानते हैं। पवित्र नदी गंगा के तट पर बसा हरिद्वार का हिन्दू, मुस्लिम, सिख धर्म के तीर्थों में महत्वपूर्ण स्थान है। जनपद में अनेक मन्दिर, आश्रम एवं दर्शनीय स्थल हैं। इनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है–

1. मनसा देवी मन्दिरः हरिद्वार में शिवालिक पर्वत श्रृखला के एक शिखर पर यह मन्दिर स्थित है। ब्रह्मा के मन से उत्पन्न तथा ऋषि जरतत्कारू की पत्नी सर्पराज्ञी देवी माँ मंसा की यहाँ

तीन मुखी और पाँच भुजाओं वाली अष्टनाग वाहिनी मूर्ति स्थापित है। मंसा देवी को दशम शक्ति भी कहा जाता है। इस पवित्र मन्दिर पर सीढ़ियों के द्वारा पैदल और रोपवे द्वारा पहुँचा जाता है। मन्दिर से हरिद्वार शहर व समीपवर्ती क्षेत्र का विहंगम दृश्य दिखायी देता है।

2. चण्डी देवी मन्दिरः हरिद्वार में गंगा नदी के दाहिने किनारे पर दीवार की भाँति स्थित शिवालिक पर्वत की एक चोटी के शीर्ष पर यह मन्दिर स्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार तन्त्र–मन्त्र की सिद्धी दात्री चण्डीदेवी ने इसी स्थान पर शुम्भ और निशुम्भ नामक असुरों का वध किया था। इस कथा की पुष्टि इस बात से होती है कि इसी पर्वत श्रृंखला पर नीलकण्ठ महादेव चोटी के पास शुम्भ और निशुम्भ नामक दो पर्वत आज भी स्थित हैं। चण्डी देवी मन्दिर जाने के लिए भी सीढ़ी और रोपवे की सुविधा स्थापित है। इस मन्दिर के पास ही महाबली हनुमान जी की माता अंजनी का मन्दिर स्थित है।

3. हरकी पौड़ीः यह पवित्र स्नानघाट ब्रह्मकुण्ड के रूप में विख्यात है। यह पवित्र घाट राजा विक्रमादित्य ने अपने भाई भृत्हरि की स्मृति में बनवाया था। ऐसा विश्वास किया जाता है कि भृत्हरि मन की एकाग्रता के लिए पवित्र गंगा के तट पर आए। जब उनकी मृत्यु हुई तो उनके नाम पर हरकी पौड़ी के नाम पर यह स्थान प्रसिद्ध हो गया।

4 दक्ष महादेव मन्दिरः हरिद्वार के उनपगर कनखल में स्थित दक्ष मन्दिर को शास्त्रों में मुख्य तीर्थ स्थल कहा जाता है। कनखल भगवान शिव की ससुराल कहलाती है। ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव की पत्नी सती (पार्वती) के पिता दक्ष प्रजापति ने इस स्थान पर यज्ञ किया था। यज्ञ के समय भगवान शिव को आमन्त्रित न करने पर उनकी पत्नी ने अपमानित महसूस किया और इस यज्ञ कुण्ड में अपनी आहूति दे दी। यह देख क्रुद्ध होकर महादेव शिव के अनुयायी वीर भद्र ने राजा दक्ष का वध कर दिया, परन्तु बाद में महादेव ने पुनः जीवित कर दिया। दक्ष प्रजापति ने बाद में अपनी गलती महसूस करते हुए इस स्थान पर भगवान शिव की स्थापना की। यहाँ पर लण्ढौरा के राजा की रानी धनकौर ने 1810 में दक्ष महादेव मन्दिर का निर्माण कराया।

5. सती कुण्डः कनखल–लक्सर मार्ग पर प्राचीन सतीकुण्ड का अपना इतिहास है। पुराणों के अनुसार इसी स्थान पर दक्ष प्रजापति ने एक विशाल यज्ञ करवाया था जिसमें भगवान शिव का अपमान हुआ था तथा सती ने कुण्ड में कूदकर यज्ञाहुति दे दी थी।

6- भीमगोड़ा कुण्डः महाभारत के एक प्रसंग के अनुसार परमवीर भीमसेन के घोड़े को ऋषिकेश मार्ग पर हरिद्वार के बाहर एक स्थान पर ठोकर लगी। ठोकर वाले स्थान पर एक कुण्ड बन गया जो बाद में भीमसेन के घोड़े की ठोकर से बनने के कारण भीमगोड़ा कुण्ड के रूप में प्रसिद्ध हुआ। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कं0 के शासनकाल में इसी स्थान पर गंगा की धारा में बैराज बनाया गया जिससे नहरें– 1. ऊपरी गंग नहर और पूर्वी गंग नहर निकालकर जल विद्युत उत्पादन और सिंचाई हेतु उस जल का उपयोग किया गया। वर्तमान हर की पौड़ी में बहने वाली गंगाजल धारा यहीं से निकली है।

7. भारत माता मन्दिरः यह आठ मंजिला मन्दिर सप्त सरोवर मार्ग पर स्थित है। यह मन्दिर

भारत दर्शन और ईष्ट देवी–देवताओं के दर्शन के लिए विख्यात है। इसका निर्माण 1983 में हुआ था। मंदिर की हर मंजिल पर जाने के लिए लिफ्ट की भी व्यवस्था है। सबसे ऊपरी मंजिल पर भगवान शिव के दर्शन होते हैं। इसके अतिरिक्त भवन में भारत के विभिन्न राज्यों का चित्रण किया गया है।

8. कलियर शरीफः मुस्लिम धर्मानुयायियों का यह तीर्थ हरिद्वार– रूड़की मार्ग पर हरिद्वार के पश्चिम में स्थित है। यह सूफी सन्त हजरत अलाउद्दीन अहमद साबिर की दरगाह है। यह हिन्दू और मुस्लिम धर्मों की एकता की मिसाल है। दरगाह पर प्रतिवर्श देश विदेश से लाखों श्रृद्धालू दर्शन करने आते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि दरगाह पर मनौती करने वालों की इच्छाओं की पूर्ति होती है।

9. शान्तिकुंजः आचार्य प्रवर श्रीराम शर्मा के संरक्षण में शांतिकुंज संस्थान की स्थापना 1971 में हुई इस संस्थान में नित्य प्रति यज्ञ, नियमित साधना सम्पन्न होती है। यहा सत्र एवं नैतिक शिक्षा सत्र निरतंर चलते रहते हैं। यहॉ पर प्रज्वलित की गयी अखंड ज्योति लगातार जल रही है। वर्तमान समय में स्थान गायत्री तीर्थ रूप में माना जाता है।

10. हज हाउसः हरिद्वार–रूड़की बाह्य क्षेत्र में स्थित पिरान कलियर के निकट प्रदेश सरकार ने हज हाऊस बनाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। लगभग 5 करोड़ की लागत से इस हज हाऊस का निर्माण किया गया है। हज हाऊस की स्थापना का एक महत्वपूर्ण उददेश्य यह था कि विश्व विख्यात पिरान कलियर उर्स के समीप बेहतर सुविधा मिलनी शुरू हो जायेगी। हज हाऊस के निर्माण का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष धार्मिक और अध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने को रहा है। इस दृष्टि से पर्यटन विभाग के लिये विकास के लिये यह स्थान काफी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

11. भारत माता मन्दिरः भारत की प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस भवन का उद्घाटन किया था। यह भारत माता मन्दिर 11 मंजिली इमारत है जिसमें भारतीय संस्कृति का दर्शन होता की विविध झांकियों का संग्रह है। यहां पर पुरातन काल के महापुरूषों, ऋषियों, मुनियों एवं समाज के विभिन्न वर्गों के महापुरूषों की स्मृतियों को आकर्षण रूप में प्रस्तुत किया गया है। कश्मीर के वैष्णोदेवी मन्दिर का सजीव चित्रण इस मन्दिर में किया गया है। मन्दिर को आकर्षक बनाने के उद्देश्य से कृत्रिम गुफाऐं, मार्ग एवं मन्दिरों को वास्तविक रूप देने का प्रयास किया गया है। पावनधान– भारत माता मन्दिर मार्ग पर वैष्णोदेवी मंदिर स्थित है।

12. पावन धाम क्षेत्रः हरिद्वार से लगभग 2 किमी. ऋषिकेश मार्ग पर पावन धाम पवित्र क्षेत्र है जिसमें स्नान घाट, पार्क आदि की व्यवस्था है। इस पर्यटक स्थल में कांच पर नक्काशी के द्वारा ऐतिहासिक महत्व की झांकियों का प्रस्तुतीकरण हुआ है।

13. पतंजलि योगपीठः इस पीठ की स्थापना कुछ समय पूर्व योगऋषि बाबा रामदेव जी द्वारा हरिद्वार–रूढ़की राजमार्ग पर की गयी। पतंजलि में योग द्वारा चिकित्सा पद्धति का विकास चिकित्सा विज्ञान की अनेक शाखाओं में यहां पर अनुसंधान किये जाते हैं। यहां पर वर्ष भर योग शिविरों का आयोजन होता है। जिसमें देश व विदेश के जनसामान्य के साथ–साथ जानी मानी राजनीतिक हस्तियां सम्मिलित होती रहती हैं। पतंजलि में औषधि अनुसंधान की विशाल एवं

आधुनिकतम प्रयोगशालाएं स्थापित की गयी है तथा औषधि निर्माण की कई इकाईयों की स्थापना की गयी है। कई सौ हैक्टेयर क्षेत्र में फैले इस केन्द्र की भव्यता दर्शकों के मन को मुग्ध कर देती है।

14. गुरूकुल कांगड़ीः यहां पर प्राचीन काल से वनों से प्राप्त जूड़ी बूटियों से औषधि बनाने की इकाईयां स्थापित की गयी है। प्रमुख औषधि वनस्पतियों में कुटकी, चिरौता, सर्पगंधा, खार, अतीश, कापफल, बुरांश, कैरूवा, कैसर, गिलोय, सतावरी आदि को चिन्हित किया गया है।

15. पिरान कलियरः रुड़की से लगभग 8 कि0मी0 की उत्तर पूर्व में गंगनहर के समीप 'पिरान कलियर' शाह अलाउद्दीन का मजार है। यहां पर सालाना इस्लामिक कलैण्डर के अनुसार 1 से 14 रबी उल अब्बल में उर्स लगता है। जिसमें मुस्लिम समुदाय के लोग धार्मिक यात्रा की दृष्टि से पहुँचते हैं। मुस्लिमों और हिन्दुओं में इस स्थान पर जाकर मन्नते मांगने की पुरानी परम्परा है।

16. रूड़कीः हरिद्वार से लगभग 30 कि0मी0 की दूरी पर पश्चिम दिशा में रुड़की 'गंगनहर' के किनारे पर स्थित है। 1847 में यहाँ स्वतंत्रा भारत की पहली इन्जीनियरिंग कालेज की स्थापना की गई है। भूकम्परोधी इमारतों के आकलन एवं निर्माण की तकनीक भी यहीं विकसित हुई है जिसमें स्वीडन, नार्वे आदि देशों के विषेशज्ञों की सेवाएं भी जाती हैं। भूगर्भ जल सर्वेक्षण के लिये आई. आई. टी. रूड़की में अलग–अलग विभाग भी स्थापित किया गया है। विश्वविख्यात संस्थान में आर्किटेक्ट एण्ड प्लानिंग, बॉयोटेक्नोलॉजी, भूकम्प इन्जीनियरिंग ओर वाटर रिसोर्स डेवलपमेन्ट के विभाग कार्यरत हैं।

हरिद्वार जनपद में आने वाले पर्यटकों की वर्षवार सूचना

अपने धार्मिक साँस्कृतिक महत्व के आधार पर हरिद्वार जनपद प्रतिवर्ष करोड़ों पर्यटकों को आगमन के धार्मिक अनुष्ठान करने, पवित्र गंगा जल स्नान करने, मन्दिर दर्शन कर पुण्य लाभ कमाने व विविध संस्कार, कर्मकाण्ड सम्पन्न पूर्ण करने आने को आकर्षित करता है। सभी धर्मों के अनुयायी हरिद्वार में अपने तीर्थस्थलों के दर्शन करने आते हैं। मुख्य पर्वों, त्यौहारों, मेला, उत्सव, आदि के अवसर पर प्रतिदिन हजारों की भीड़ दर्शन करने आती है। सारणी में हरिद्वार में आने वाले पर्यटकों की संख्या वर्षवार दी गयी है

वर्ष	भारतीय पर्यटक	प्रतिशत	विदेशी पर्यटक	प्रतिशत	कुल योग
2010	18837125	99.84	29555	0.16	18866680
2015	19332025	99.90	18615	0.10	19350640
2017	20985975	99.89	23123	0.11	21009098
2018	21555000	99.90	22853	0.10	21577583

स्रोत– जिला अर्थ एवं संख्या विभाग हरिद्वार, 2018–19

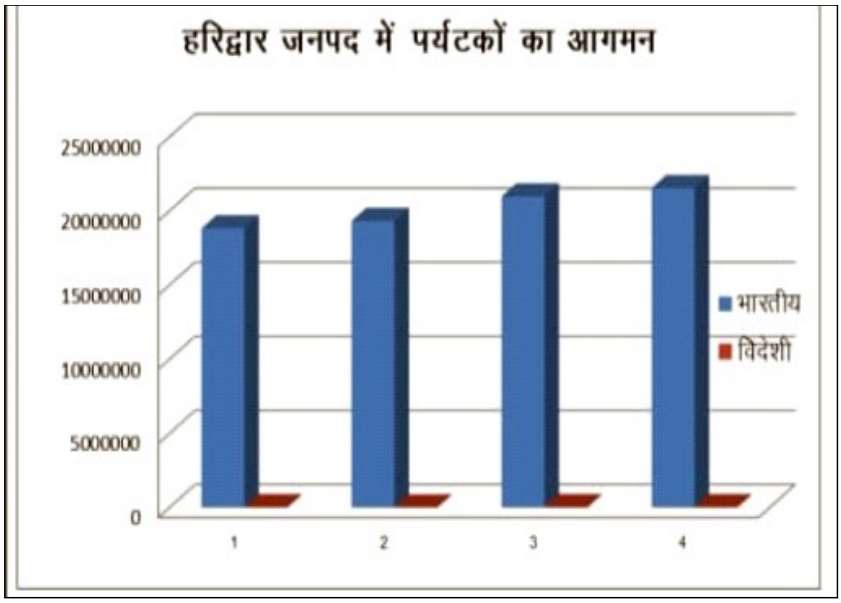

सारणी में दी गयी सूचनाओं के अनुसार वर्ष 2010 में हरिद्वार में कुल 1886680 पर्यटक हरिद्वार जनपद में आए। इनमें से 18837125 भारतीय तथा 29555 विदेशी पर्यटक थे। वर्ष 2015 में हरिद्वार में कुल 19350640 पर्यटक हरिद्वार में आए। इनमें से 9332025 भारतीय तथा 18615 विदेशी पर्यटक थे। वर्ष 2017 में हरिद्वार में कुल 21009098 पर्यटक हरिद्वार में आए। इनमें से 20985975 भारतीय तथा 23123 विदेशी पर्यटक थे। वर्ष 2018 में हरिद्वार में कुल 21577583 पर्यटक हरिद्वार में आए। इनमें से 21555000 भारतीय तथा 22853 विदेशी पर्यटक थे।

घरेलू पर्यटक

भारत की सीमा क्षेत्र से आने वाले पर्यटक घरेलू पर्यटक कहलाते हैं। इनका आगमन उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, जम्मू–कश्मीर, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड और बंगाल राज्यों से अधिकतर होता है। भाषा और मान्यताओं के अन्तर के कारण अन्य राज्यों के लोग या पर्यटक हरिद्वार में न के बराबर आते हैं। एक अनुमान के अनुसार हिन्दू तीर्थों में आने वाले तीर्थ यात्रियों की संख्या का 90 प्रतिशत से अधिक इन्हीं हिन्दी व समरूपी भाषी क्षेत्रों का योगदान होता है। इसके साथ ही दूरी के कारण निकटवर्ती राज्यों, के हिन्दी भाषी क्षेत्रों के पर्यटकों की संख्या 60 प्रतिशत से अधिक होती है।

विदेशी पर्यटक

भारत की सीमा से बाहर से आने वाले पर्यटकों को विदेशी पर्यटक कहा जाता है। धार्मिक स्थल होने के कारण यहाँ पर हिन्दू धर्म व भारत भूमि से सम्बन्ध रखने वाले विदेशों में बस चुके व्यक्ति

ही पारिवारिक व सामाजिक संस्कारों को सम्पन्न करने हेतु हरिद्वार आते है। इनमें अधिकतम संख्या हिन्दू धर्मानुयायी लोगों की ही होती है। ये लोग पड़ौसी देश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, पाकिस्तान आदि देशों के साथ ही दक्षिण अफ्रीका, यूनाईटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा आदि क्षेत्रों के भारतीय मूल के तथाकथित अप्रवासी भारतीय होते हैं। इसके अलावा मुस्लिम व ईसाई धर्मानुयायी भी विभिन्न देशों हरिद्वार आते हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि खासकर विकासशील व धर्मप्रधान अशिक्षित रूढ़िवादी समाजों/देशों में मानव आज विकास और अध्यात्म/धर्म के भंवरजाल में फंस गया है। अध्ययन क्षेत्र और पूरा दक्षिणी पूर्वी एशियाई क्षेत्र इसकी कठोर गिरफ्त में जकड़ा हुआ है। अध्ययन क्षेत्र हरिद्वार जनपद में भौगोलिक–प्राकृतिक कारणों के साथ ही अनेक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक कारणों– अशिक्षा, धर्मान्धता, तीव्र जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी, गरीबी, अनियोजित नगरीकरण प्रशासनिक और राजनीतिक अदूरदर्षिता, जाति–पाँति, भेद–भाव तथा अन्य अनेक कारणों के चलते अध्ययन क्षेत्र विषम परिस्थितियों से घिरता जा रहा है।

समस्याएं

पर्यटन, पर्यावरण, पारिस्थितिकी, सामाजिक, आर्थिक, साँस्कृतिक (धार्मिक) जीवन के सन्दर्भ में अध्ययन क्षेत्र हरिद्वार जनपद में निम्न कठिनाईयों/समस्याओं का उल्लेख किया जा सकता है–

1– नगर, औद्योगिक क्षेत्र और धार्मिक पर्यटन का मिश्रण

हरिद्वार नगर उत्तराखण्ड राज्य का सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला और औद्यौगिक, शैक्षिक, धार्मिक कार्यकलापों की प्रधानता वाला जनपद है। नगरीय जनसंख्या की अधिकता के कारण ही हरिद्वार को नगर निगम का दर्जा दिया गया है। 2011 की जनगणना के अनुसार जिसकी कुल जनसंख्या 2 लाख से अधिक है। यह हरिद्वार जनपद का परिवहन (रेल और सड़क) उद्योग तथा व्यापार का भी बहुत बड़ा केन्द्र है। हरिद्वार के तीर्थों–स्थलों के विवेचन और प्रत्यक्ष अवलोकन से स्पष्ट होता है कि हरिद्वार और उसके आस–पास के तीर्थ वर्तमान समय में विशुद्ध तीर्थ स्थल न रहकर नगरीय जीवन, औद्योगिक वातारण और धार्मिक पर्यटन का घालमेल बनकर रह गए हैं। भारत और विश्व के कोने–कोन में बसे हिन्दू धर्मानुयायियों और अन्य सभी धर्मों के श्रृद्धालुओं और पर्यटकों की विशाल संख्या और उनकी पर्यटक सुविधाओं की मानक आवश्यकताओं को उपलब्ध कराने में यह जनपद पूरी तरह असमर्थ होता जा रहा है। हरकी पौड़ी के आस–पास का क्षेत्र अत्यन्त संकरा होता जा रहा है। उत्सवों, पर्वो, त्यौहारों के समय वहाँ पर श्रृद्धालुओं के लिए पैदल चलना भी दुष्कर हो जाता है।

2. अवारा लोगों की भरमार

धार्मिक तीर्थ–स्थलों पर अपने कुकर्मों, तथाकथित पापों, अपराधों की मौन स्वीकृति और परिवार व प्रियजनों के जीवन को जन्म–मरण के जंजाल से बचाने के लिए लोग अनेक प्रकार से दान–पुण्य का कार्य करने धार्मिक स्थलों पर आते हैं। दूसरी और इस प्रकार से लोगों द्वारा नकद, खाद्य वस्तु और वस्त्र–आभूषण के रूप में लोगों द्वारा दान भिक्षा देने की कुरीति भी प्रचलित होती

है जिसे प्राप्त करने के लिए हजारों आवारा, बहुरूपिये, भिखारी परिवार व रिश्तेदारों के साथ मंडराते रहते हैं। दर्शनार्थियों और पर्यटकों को बहुत तंग करते हैं। नशाखोर अपराधी प्रवृत्ति के लोग जानलेवा हमला भी कर देते हैं। इनके वीभत्स रूपों, ढोंगों को देखकर लोगों के मन में यह विचार आता है कि जो भगवान अपने दर के सामने मंडराते इन लोगों की मदद नहीं कर सकता वह दुनिया के कष्टों को जिन्हें कि दूरस्थ लोग या अन्य धर्म के अनुयायी मानते भी नहीं हैं वह कैसे सर्व शक्तिमान हो सकता है।

3. पुरोहित कर्मकाण्ड कराने वाले लोगों द्वारा ठगना

तीर्थ स्थलों पर इस घटना से सम्बन्धित अमानवीय व शोशणकारी, प्रकरण अक्सर समाचारों में प्रकाशित होते रहते हैं। पुरोहितों की संख्या व परिवार में वृद्धि, नए पुरोहितों के आगमन, महंगाई और धार्मिक तीर्थाटन में कमी, लोगों की जागरूकता आदि के कारण दान–दक्षिणा और उपहारों को लेकर श्रृद्धालुओं और पुरोहितों या पुरोहितों के मध्य आपस में लड़ाई–झगड़े, अखाड़ों के बीच में तनाव व संघर्ष अक्सर होते रहते हैं। इनके दण्ड, छल–कपट, दुराचार, दुर्व्यवहार, शोषण वाले व्यवहारों के कारण जहाँ जनता और श्रृद्धालू धोखा खाकर हानि उठाते हैं वहीं पर हजारों बाबा, साधु, पण्डा–पुजारी, उनके शिष्य, शार्गिद आदि जेलों की हवा खा रहे हैं। इन सब अधार्मिक, आपराधिक गतिविधियों का खामियाजा अन्ततः धर्म और आस्था को ही चुकानी पड़ती है।

4. भिक्षावृत्ति

हिन्दू धर्म के अन्य तीर्थस्थलों की भाँति हरिद्वार और मुस्लिम तीर्थस्थलों की भाँति पीरान कलियर तीर्थ भी ही हजारों भिखारियों, सांई–गुसाई, बहुरूपियों को आकर्षित करता है। परिणामस्वरूप स्थायी आश्रमों से बाहर भिखारी बच्चे, बालिकाऐं, स्त्री–पुरूष, वृद्ध सन्यासिनियां, बाबा वेशधारी और तरह–तरह से अपनी सजावट करने वाले लोग पूरे हरिद्वार शहर, मन्दिर, आश्रमों, धर्मशालाओं के बाहर मण्डराते रहते हैं। इनमें से कई शरारती लोग गिड़गिड़ाकर श्रृद्धालुओं के चारों और मंडराकर, काफी दूर तक पीछा करके धन व सामान की याचना करके उन्हें परेशान, तंग और व्याकुल कर देते हें। कई लोगों को अपने झांसे में लेकर ठग भी लेते हैं।

5. अन्य समस्याएं

अध्ययन क्षेत्र में अन्य समस्याओं के रूप में सार्वजनिक परिवहन का आभाव, जनसंख्या वृद्धि आध्यात्मिक शिक्षा केन्द्रों की भरमार, मोटर वाहनों की भरमार, यातायात जाम, गन्दगी आदि हैं।

नियोजन

हरिद्वार जनपद में पर्यटन विकास की उपर्युक्त समस्याओं के निराकरण एवं भारतीय पर्यटन की भावी दिशा के निर्धारण हेतु हमें प्रयास करने होंगे क्योंकि एक आंकलन के अनुसार लगभग 60 करोड़ पर्यटक विष्व भर में एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण करते हैं पर भारत में इसका मात्र 0. 4 प्रतिशत भाग ही पहुँचता है। इसका मुख्य कारण पर्यटन सुविधाओं के अभाव के साथ–साथ विदेशी मीडिया द्वारा दुष्प्रचार कर भारत को असुरक्षित और खतरनाक बताकर प्रायः पर्यटन के लिये निशिद्ध घोषित कर दिया जाता है। आन्तरिक असुरक्षा, अशान्ति, आतंकवाद, दंगा फसाद और सीमा पार से युद्ध की आशंका वाला देश बताकर पर्यटकों को प्रायः भारत से दूर रहने की सलाह दी जाती है।

आवश्यकता इस बात ही है कि भारत को सुन्दर भारत, सुरक्षित भारत, सुसंस्कृत भारत कहकर विज्ञापित किया जाना चाहिये। विपणन के सभी सिद्धांतों और तकनीकों का प्रयोग पर्यटन व्यवसाय की सफलता के लिये अपरिहार्य है कहा जा सकता है कि अतीत के संदेह और अज्ञानता के कुहासे से निकल कर इस क्षेत्र का पर्यटन उद्योग का काफिला उस मुकाम पर आ पहुँचा है, जहाँ से सुखद भविष्य की स्वर्णिम बाहों का आमंत्रण स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

सन्दर्भ

1. सामाजिकार्थिक समीक्षा, जनपद हरिद्वार, वर्ष 2012–13, 2013–14, 2018–19, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी कार्यालय, हरिद्वार
2. हरिद्वार जनपद सांख्यिकीय पत्रिका– 2011, 2014, 2017।
3. हरिद्वार जनपद हस्तपुस्तिका भाग 12 अ एवं ब भारत की जनगणना 2011।
4. पर्यटन मन्त्रालय, भारत सरकार वार्षिक रिर्पोट 2009–10, 2017–18।
5. हरिद्वार द डिवाईन गेटवे टू देवभूमि, उत्तराखण्ड टूरिज्म डेवलपमेन्ट बोर्ड।
6. शिवाली राजपूत 2013 हरिद्वार जनपद में पर्यटन का पर्यावरण पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
7. मनुज देवी (2014) हरिद्वार जनपद की पर्यावरणीय समस्याओं एवं प्रबन्धन का भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
8. डॉ0 जगमोहन नेगी 1996 ''पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त', तक्षशिला प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली।